को भी ब्रह्म कहते हैं। अर्जुन ने 'आत्मा' के सम्बन्ध में जिज्ञासा की है। वैदिक शब्दकोष के अनुसार 'आत्मा' शब्द प्रसंगानुसार मन, आत्मा, देह तथा इन्द्रियों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अर्जुन ने श्रीभगवान् को **पुरुषोत्तम** कहा, क्योंकि वह उन्हें केवल अपना सखा समझ कर नहीं, अपितु निर्णायक उत्तर देने में समर्थ परम प्रमाण पुरुषोत्तम जानकर जिज्ञासा कर रहा है।

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः।।२।।

अधियज्ञः=यज्ञ का अधीश्वर; **कथम्**=कैसे है; **कः**=कौन है; **अत्र**=यहाँ; **देहे**=देह में; **अस्मिन्**=इस; **मधुसूदन**=हे कृष्ण; **प्रयाणकाले**=अन्तकाल में; **च**=तथा; **कथम्**=किस प्रकार; **ज्ञेयः**=जानने योग्य हैं; **असि**=आप; **नियत आत्मभिः**=संयमी पुरुषों द्वारा।

अनुवाद

हे मधुसूदन! यज्ञपुरुष इस शरीर में कैसे हैं और किस अंग के निवासी हैं? तथा भक्तियोगी अन्तकाल में आपको कैसे जान सकते हैं?।।२।।

तात्पर्य

यज्ञाधिपति (अधियज्ञ) का अर्थ विष्णु भी हो सकता है और इन्द्र भी। श्रीविष्णु ब्रह्मा-शिवादि सब देवों के आदिदेव हैं तथा इन्द्र प्रधान देवता हैं। इन्द्र और विष्णु, दोनों की यज्ञों द्वारा आराधना की जाती है। यहाँ अर्जुन की जिज्ञासा है कि वास्तव में **अधियज्ञ** कौन है तथा जीव की देह में किस प्रकार से है।

अर्जुन ने श्रीभगवान् को **मधुसूदन** सम्बोधित किया है, यह स्मरण कराने के लिए कि एक समय उन्होंने मधु दैत्य का संहार किया था। वास्तव में अर्जुन के चित्त में इन सब संदेहमूलक प्रश्नों को नहीं उठना चाहिए था, क्योंकि वह कृष्णभावनाभावित है। इसलिये ये सन्देह असुरों के समान हैं और श्रीकृष्ण असुर संहार में अति कुशल हैं। अर्जुन ने उन्हें यहाँ **मधुसूदन** कहकर पुकारा, जिससे वे उसके चित्त के सन्देह रूपी असुरों को नष्ट कर दें।

इस श्लोक में **प्रयाणकाले** पद बहुत महत्त्वपूर्ण है। हम जीवनभर जो कुछ भी करते हैं, उसकी अन्तकाल में परीक्षा होती है। अर्जुन को भय है कि जो कृष्णभावनाभावित हैं, वे भी मृत्यु-समय श्रीभगवान् को भूल सकते हैं। कारण, उस काल में देह के सब कार्य रुक जाते हैं और मन भयरूप मोह से अति व्याकुल हो उठता है। इसी कारण महाभागवत कुलशेखर महाराज की प्रार्थना है, 'प्रभो! इस स्वस्थ अवस्था में ही मेरी तुरन्त मृत्यु हो जाय, जिससे मेरा मन रूपी राजहंस सुगमता से आपके चरणारविन्द की कर्णिका में प्रवेश कर सके।'' यहाँ राजहंस के रूपक का उल्लेख इसलिये है कि प्रायः कमलकर्णिका में प्रवेश करके हंस आनन्दित होता है। शुद्ध भक्त का चित्त भी श्रीभगवान् के चरणारविन्द में प्रवेश करने को सदा